

	मानवीय चेतना सार्वभौम है
<p>So we are going to talk over together this evening many things. one doesn't listen to another actually. If you do listen, there is always a defence, there is always a resistance to anything that is said, something new and perhaps over which you have not thought. So there is immediate reaction is to resist or not listen because it might be disturbing. So there is an art of listening. That is, to listen to what is being said, not interpret what is being said to your own convenience, to your own traditional language. But if you understand English - I hope some of you do - then to listen to the word, the meaning of that word, to see if we understand each other. And to listen one has to have not only certain quality of attention but also a sense of affection, a sense of trying to understand what the other fellow is saying. A communication is possible at depth as well as superficially when both of us are concerned about the same subject or the same ideas with the same concern about a certain thing, then we are both in communication with each other. But if you resist, as perhaps you are going to resist a great deal with what the speaker is going to say, then communication is not possible. And as you are all good enough to come to the talk, I don't know why, but you are here.</p>	<p>आज की इस सांध्य बेला पर हमलोग एक साथ मिलकर अनेक चीजों पर बातचीत करने जा रहे हैं। सही माने में कहिए तो कोई भी, दूसरे की बात नहीं सुनता। यदि आप इसे ध्यान से सुनते हैं तो जब नई बात यहां कहीं जाती है उसका सदैव विरोध होता है। यहां विरोध की प्रक्रिया तत्क्षण होती है क्योंकि जो कुछ भी नई बात कहीं जा रही है वह घातक भी हो सकती है। अतः किसी चीज को सुनने की एक कला होती है: जो कुछ कहा जा रहा है उसे ध्यानपूर्वक सुनना, न कि जो कुछ कहा जा रहा है उसका अपनी समझ के अनुकूल, अपनी परम्परागत भाषा के अनुकूल अर्थ लगाना, अपितु शब्दों को ध्यान से सुनना और यह देखना कि हम एक दूसरे को ठीक से समझें। किसी को ध्यान से सुनना मात्र सावधान होने का ही कोई विशेष गुण नहीं है अपितु स्नेह का बोध भी है, अपितु दूसरा जो कुछ कह रहा है उसे समझने का प्रयत्न करने का भाव भी है। गहनता से संप्रेषण केवल तभी होता है जब हम दोनों का संबंध एक ही विषय, एक ही विचार या एक ही नियत चीज से होता है। तभी हम दोनों एक दूसरे के साथ गहन संवाद कर सकते हैं। परंतु यदि आप विरोध करते हैं जैसा कि शायद आप लोगों में से कुछ लोग, वक्ता कुछ कहने जा रहा है उसका जम कर विरोध करने जा रहे हैं, तब वहां संवाद नहीं है। हमें श्रवण की कला सीखनी है। जब आप अपने मन पसंद का संगीत सुनते हैं तो वहां प्रतिरोध नहीं होता। आप उस संगीत के साथ होते हैं, आप अपना सिर भी हिलाते हैं और हाथ से ताली भी बजाते हैं, उस संगीत की प्रशंसा की अभिव्यक्ति में आप इन सब चीजों को करते हैं और उसके प्रति अपनी समझ की अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं। वहां किसी प्रकार की सुरक्षा की बात नहीं होती, वहां किसी प्रतिरोध का भाव नहीं होता, आप उसके साथ होते हैं आप उसमें बह रहे होते हैं। इसी प्रकार कृपया इन बातों को ध्यान से सुनें, निर्देशित न होवे, क्या करना है इसमें न आवें, अपितु जो कुछ कहा जा रहा है उसे समझें।</p>
<p>So, please, as we are going to talk over together like two friends, please listen very carefully, learn the art of listening, not to the speaker</p>	<p>अतः कृपया करके सुनने की कला सीखें, मात्र वक्ता को ही नहीं अपितु अपनी पत्नी को, अपने पति को, अपने बच्चों को, चिड़ियों को, बहती हवाओं को,</p>

only, to your wife, to your husband, to your children, to the birds, to the wind, to the breeze, so that you become extraordinarily sensitive in listening. And when you listen you capture quickly, you don't have to have lot of explanations and analysis and descriptions, you are flowing with it. So please, as we are talking together as two friends sitting in a park or in a wood, quiet, birds are singing, plenty of dappled light coming through the leaves on the floor and there is a sense of appreciation of beauty. And when you so listen, the miracle takes place, when you listen. It is like sowing a seed. And if the seed is vital, strong, healthy, and the ground is properly prepared, it inevitably grows. So, if one may point out, one has to learn the art of listening. And if you listen very, very carefully, you capture it so quickly, the meaning of what the other is saying. Perhaps many of you have listened to the speaker for a number of years, unfortunately. And you get used to it. You get used to his language, his gesture, how he looks and so on and you gradually slip off. And you say, why haven't I, after years of listening to this man, have not changed? Because they have actually not listened with their... at their depth, with their hearts, with their minds, with their whole energy. So, don't blame the speaker, but rather learn, if one may suggest most respectfully, the way of listening. There is great beauty in listening to a bird, to a wind among the leaves and to a word that is spoken with depth, with meaning, with passion.

शीतल मंद समीर को भी सुनें जिससे आप श्रवण की क्रिया में अतिशय संवेदनशील हो सकें। जब आप किसी चीज को ध्यान से सुनते हैं तो आप इसे तत्काल ग्रहण कर लेते हैं, उस समय आप के भीतर अनेकों व्याख्यायें, विश्लेषण और वर्णन नहीं होते हैं, तब आप केवल एक दूसरे को सुन रहे होते हैं। हम लोग एक उद्यान या अरण्य में बैठकर दो मित्रों की भांति मिलजुल कर बातचीत कर रहे हैं, वहां शांति का वातावरण है, परिन्दे गीत गा रहे हैं, पत्तियों से छनकर चबूतरे पर पर्याप्त प्रकाश पड़ रहा है और यहां के सौन्दर्य की प्रशंसा करने का मन हो रहा है। ऐसी स्थिति में जब आप सुनते हैं। तो चमत्कार घटित होता है। जब आप ऐसे सुनते हैं तो वह बीज बोने जैसा होता है। यदि बीज जीवंत, शक्तिशाली एवं स्वस्थ है तथा भूमि अच्छी प्रकार से तैयार है तो निश्चित ही वह उगेगा। अतः हमें सुनने की कला सीखनी है। यदि आप बड़ी ही सावधानी से सुनते हैं तो दूसरा जो कुछ कह रहा है उसे आप बड़ी शीघ्रता से ग्रहण कर लेते हैं। शायद आप लोगों में से अनेकों ने दुर्भाग्य से वक्ता को वर्षों तक सुना है और आप उसके अभ्यस्त हो गये हैं, उसकी भाषा के उसकी भाव भंगिमाओं के अभ्यस्त हो गये हैं कि वह कैसे देखता है तथा इसी तरह की अन्य बातें और धीरे-धीरे आप नींद में सो जाते हैं। और फिर बाद में आप यही कहते हैं कि “इस आदमी को वर्षों तक सुनने के पश्चात भी मुझमें क्यों परिवर्तन नहीं हो पाया”। वह इसलिए कि आप सही माने में, अपने हृदय, अपने मन, और अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा से उसे नहीं सुना है। अतः आप वक्ता को दोषी न ठहराये अपितु कोई बड़ी सावधानी से सुनने का तरीका सुझाये तो उसे सीखें। किसी पक्षी को, किसलय से होकर बहने वाली हवा को और उस शब्द को सुनना जो गहरे अर्थ लिए हुए प्रेम पूर्वक बोले जाते हैं उसे सुनने में महान सौन्दर्य है।

We were saying yesterday that the future of man is at stake, and the future man has no existence in isolation, isolation as a nation, isolation as a group, isolation in religion, isolation as an individual and isolation in consciousness. For most of us thinking is individual. What I think, what you think. There, there is a difference, a division. Your opinion against my opinion, my thought against your

कल मैं यह कह रहा था कि मनुष्य का भविष्य खतरे में है और बिलगाव में मनुष्य का अस्तित्व नहीं होता जैसे राष्ट्र के रूप में विलगाव, समूह के रूप में विलगाव, धर्म के रूप में विलगाव, वैयक्तिक रूप में विलगाव और चेतना में विलगाव। हममें से अधिकांश की विचारणा वैयक्तिक है। आप सोचते हैं कि आप की सम्मति और मेरी सम्मति में, आपके विचार एवं मेरे विचार में, या आपके पति के विचार में अथवा आप

thought or your husband's thought, your wife's thought. So thinking is not individual. Thinking is the ordinary factor of the poorest, ignorant man and the greatest Nobel prize winner, scientist. They both think. But we have the idea that your thinking is yours. But whereas thinking is the nature of man. Clear, this point? So when you think, it is not your individual thinking, it is the capacity of the brain to be active and respond in words, in thought. This is the nature of man. But we have reduced it as my thinking opposed to your thinking, or you agree with my thinking or I agree with your thinking. This must be made very clear in these talks.

की पत्नी के विचार में अन्तर है, भेद है। परंतु यह जान लें कि विचार वैयक्तिक नहीं होता है। अत्यंत गरीब और अज्ञानी व्यक्ति से लेकर महान नोबुल विजेता वैज्ञानिक तक विचारणा की बात सबमें सामान्य है। वे दोनों ही विचारक हैं। परंतु हमारी ऐसी धारणा है कि हमारी विचारणा हमारी अपनी है जब कि विचारणा मनुष्य मात्र का स्वभाव है। इस बात को ठीक से समझ लें। जब आप विचार करते हैं तो यह विचारणा आपकी वैयक्तिक नहीं होती, सक्रिय होना एवं शब्दों में, शब्दों के रूप में प्रति उत्तर देना यह सब आपके मस्तिष्क की क्षमता का परिणाम है और यह मनुष्य मात्र का स्वभाव है। परंतु हमने विचारणा को, मेरी विचारणा आप की विचारण के विपरीत है इस रूप में सीमित कर दिया है। हममें से अधिकांश ने सशक्त मताग्रह प्रवृत्ति एवं निष्कर्ष को प्राप्त कर लिया है। हम सोचते हैं कि हमने इतना अनुभव प्राप्त कर लिया है अतः यह अनुभव एवं निष्कर्ष हमारा है। जब आप के समक्ष कोई नई बात रक्खी जाती है तो आप उसे देखना भी स्वीकार नहीं करते। फिर भी विचारणा मनुष्य मात्र का स्वभाव है।

And when you observe what is going on in the world outside of you, each country is isolating itself, each group is isolating, the Muslim, the Hindu, the Buddhist, the Tibetan, the Russian, the American and so on, Chinese. I don't have to enumerate all the names. This is what is happening. Each group is isolating. One follows one particular guru, another, another guru and so on. This factor of isolation is destroying the world, is separating humanity. This is an actual fact that is taking place in the world. Then inwardly each of us thinks we are separate. Tradition, religion, all that has conditioned our thinking that we are separate human beings - of course we are separate in the sense you are a man, you are a woman, I am a man or I am a woman, you are a man, tall, short, light, black and so on. But we are talking at a depth. That is human consciousness is general, is shared by all human beings. All human beings suffer, go through great agonies, shed tears, have the sense of loneliness, pain, anxiety, depression, uncertainty. The poorest

क्या हम इससे आगे बढ़ सकते हैं? आपके बाह्य जगत में जो कुछ हो रहा है जब आप उसका अवलोकन करते हैं तो आप देखते हैं कि प्रत्येक देश अपने आप में अलग-थलक है, प्रत्येक समूह अपने को मुस्लिम, हिन्दू, बौद्ध, तिब्बती, रूसी, अमेरिकी आदि के रूप में अलग-थलक कर रहा है। विलगता की यह बात संसार को नष्ट कर रही है, मानवता को विभाविता कर रही है। यह एक वास्तविक तथ्य है जो दुनिया भर में हो रहा है। फिर अंतरमन से हममें से प्रत्येक यह सोचता है कि हम अलग हैं। परम्परा, धर्म यह सभी कुछ ने हमारी विचारणा को संस्कारित कर दिया है कि हम एक अलग तरह के मनुष्य हैं। आप महिला हैं और मैं पुरुष हूं, लम्बा हूं नाटा हूं, गोरा हूं काला हूं इसी तरह की अन्य बातों के रूप में हम पृथक जरूर हैं। परंतु हम इससे भी गहरी बात कह रहे हैं कि मानवीय चेतना सार्वभौम है, उसमें सभी लोगों की भागीदारी है। सभी मनुष्य दुख भोगते हैं, महान पीड़ा से गुजरते हैं, आंसू बहाते हैं, सभी के पास अपने अकेलेपन का, पीड़ा का, दुश्चिन्ता का, नैरात्म का अनिश्चितता का बोध होता है। अत्यंत गरीब और अत्यंत परिष्कृत एवं सुसंस्कृत मानव, सभी में यह सब सामान्य बात है। वे

and the most sophisticated, erudite human being, all have this general factor. They all share this. This is so. So our consciousness is not yours or mine. It is the consciousness of all human beings. This is very difficult for most people to see this and see the reality of it, because we have been so conditioned. In Christianity that you are a separate soul. Here, you are a separate... you are Atman, you reincarnate over and over again till you reach god knows what. It is still the emphasis that you are a separate individual. Is that so? We are questioning it. Therefore, you have to find out, question, doubt, ask, which means you are listening without any defence, without any resistance to this truth. We are using the word correctly, it is the truth. You may at the periphery, on the outside have certain mannerism, certain habits, certain tendencies, capacities but if you move from the outer to the inner, we all share the same common issues. So unless we realise this, not verbally, not intellectually but in our heart, in our minds, in our blood, we are going to destroy each other, which is going on.

सभी इसमें भागीदार हैं। यह ऐसा ही है। अतः हमारी चेतना आपकी या मेरी नहीं है। यह सम्पूर्ण मानवता की चेतना है। अधिकतर लोगों के द्वारा इस सच्चाई को देख लेना बड़ा ही कठिन है क्योंकि हम इतने संस्कारित कर दिये गये हैं। ईसाइयों के अनुसार आप एक अलग आत्मा हैं। यहां हिन्दूओं में यह धारणा है कि आपका बार-बार पुनर्जन्म होता है। तभी तो इस बात परबल दिया जाता है कि आप अलग व्यक्ति हैं। क्या ऐसा है? हमें प्रश्न उठाने हैं। हमें इसका पता लगाना है, संदेह करना है, प्रश्न पूछना है जिसका अर्थ है बिना सुरक्षा के, बिना किसी प्रतिरोध के, सत्य को ध्यान से सुनना। हम ठीक शब्द का उपयोग कर रहे हैं कि यही सत्य है। हो सकता है कि ऊपर से आप बाह्य रूप से विशेष तरह की आदत, विशेष तरह की प्रवृत्ति और क्षमता रखते हों, परंतु यदि आप बाहर से भीतर की ओर अंतर्ग्राह्य करें तो हम देखते हैं कि इन सब सामान्य बातों के लिए हम सभी सहभागी हैं। जब तक हम इसे, शाब्दिक रूप से नहीं, बौद्धिक रूप से नहीं अपितु अपने हृदय से मन से, रुधिर से समझ नहीं लेते तब तक हम एक दूसरे को विनष्ट करने जा रहे हैं।

So are we capable of listening to this fact, not your opinions about the fact but the actual fact that our consciousness which is the content, our consciousness is made up of its content. Isn't it? Look, great many books have been written about consciousness. There are specialists about consciousness, conferences about consciousness all over the world. And scholars, experts who have studied not themselves but other poor victims, they have met and discuss. But we are not professionals. At least I am not. But one has inquired into the nature of one's own consciousness, observed the content of it, because without the content there is no consciousness. Right? Are you following all this? Are we moving together? Consciousness is made up of one's beliefs, one's tendencies, one's secret desires, anxieties, beliefs, loneliness, and so on. That is the content which

हम लोग इस तथ्य को सुनने में सक्षम है कि हमारी चेतना अपनी ही अन्तर्वस्तु है, हमारी अपनी ही अंतर्वस्तु से बनी है। क्या ऐसा नहीं है? देखिये, चेतना के संबंध में अनेकों महान ग्रंथ लिखे गये हैं। चेतना के लिए सारी दुनिया में सम्मेलन किये जाते हैं। हर एक को अपनी चेतना से स्वभाव की जांच करनी है, इसकी अंतर्वस्तु का अवलोकन करना है, क्योंकि बिना अंतर्वस्तु के चेतना नहीं होती। क्या आप यह सब समझते हैं? हर एक की चेतना उसकी धारणाओं, उसकी प्रवृत्तियों, उसकी प्रच्छन्न वासनाओं, दुश्चिंताओं और एकाकीपन इत्यादि से मिल कर बनी है। यही वह अंतर्वस्तु है जो चेतना का निर्माण करती है। जैसा कि हम जानते हैं कि बिना अंतर्वस्तु के चेतना नहीं होती। यदि आप अपनी चेतना का अवलोकन करें कि आप क्या है तो आप जो कुछ है वही आपकी चेतना है। आपके भय, आपकी वासनाएं, आपका आनन्द, आपका एकाकीपन, विषाद, दुश्चिंता यही सब है जो कि आप हैं, जिसमें आप विश्वास करते हैं।

<p>makes up consciousness. Without the content, there is no consciousness as we know it. If you observe your own consciousness, that is what you are. Your consciousness is what you are: your fears, your desires, your pleasures, your loneliness, depression, anxiety and all that, that is what you are, what you believe. You believe that you are god, you are that and so on.</p>	
<p>So the content makes consciousness and that consciousness is conditioned. And since it is conditioned, it must be in conflict. Aren't you all in conflict of some kind or another, conflict being dissension between two people, conflict with oneself, what is and what should be. That is a conflict. A man who is violent, as all human beings apparently are violent. The content of our consciousness is part of that violence. And conflict arises when there is a duality. That is I am violent, I should not be violent. Or I have the ideal of non-violence which this country loves. The idea of non-violence or practising non-violence but the fact is you are violent. That is a fact. The other is not a fact.</p>	<p>अतः अंतर्वस्तु ही चेतना का निर्माण करती है और ऐसी चेतना संस्कारित होती है। चूंकि यह संस्कारित है अतः निश्चित ही यह द्वंद्व में होगी। क्या आप सब किसी तरह के अथवा विभिन्न तरह के द्वंद्व में नहीं है, द्वंद्व दो चीजों के बीच का विरोध है, क्या है और क्या होना चाहिए यही स्वयं का द्वंद्व है? यही सब द्वंद्व हैं। सभी मानव प्रत्यक्ष रूप से हिंसक हैं। हमारी चेतना की अंतर्वस्तु उस हिंसा का अंग हैं। जब द्वैत होता है तो द्वंद्व उत्पन्न होता है। जैसे मैं हिंसक हूँ पर मुझे हिंसक नहीं होना चाहिए। अतः या तो मेरे पास अहिंसा का आदर्श होता है अथवा मैं अहिंसा का अभ्यास करता हूँ, परंतु सच्चाई यह है कि मैं हिंसक हूँ। यही सच है। अहिंसा का आदर्श सच नहीं है।</p>
<p>I wonder if you see this. We must go into this very carefully, because we are trying to understand why human beings live perpetually in conflict, why there is a contradiction: I am, I should be. I am violent, I must become non-violent. And the non-violent is an idea, is a concept, is not an actuality, because I am violent. Do you see this actuality? This is the fact. The other is non-fact. But we have created or we think the pursuit of non-violence will help us to become non-violent. We will be free from violence. That is - this is rather important, go into it, I will go into it slowly. I am violent. Human beings are violent. I am violent. Let us understand the content of that word. What does violence mean? There is physical violence - right? You with a gun shoot me, or you hit me, or you throw a bomb at me, you slap me, you injure me. That is a physical violence. What is</p>	<p>हमें बड़ी सावधानी से इन चीजों में जाना चाहिए क्योंकि हम इस बात का प्रत्यक्ष कर रहे हैं कि मनुष्य निरन्तर द्वंद्व में क्यों रहता है, विरोध क्यों है, मैं यह हूँ और मुझे यह होना चाहिए, मैं हिंसक हूँ पर मुझे अनिवार्यतः अहिंसक होना चाहिए। अहिंसा एक विचार है, एक प्रत्यय है, यह वास्तविकता नहीं है क्योंकि हम हिंसक हैं। यही सच्चाई है, यही वास्तविकता है। और यह दूसरा अर्थात् अहिंसा हमारी सच्चाई नहीं है, परंतु हम सोचते हैं कि अहिंसा का अनुसरण करना हमें अहिंसक होने में सहायक होगा, अर्थात् हम हिंसा से मुक्त हो जायेंगे। आइये इस शब्द की अंतर्वस्तु को समझा जाये। हिंसा का क्या अर्थ है? आंतरिक क्रोध, घृणा, लोगों को नीचा दिखाना, केवल बाह्य रूप से ही नीचा दिखाना नहीं अपितु विचारों से भी नीचा दिखाना कि देखो! मैं जानता हूँ और आप नहीं जानते, मैं जो कुछ आप से कहूँगा आप उसका पालन करेंगे, यही है नीचा दिखाना। गुरु हिंसक होता है क्योंकि वह लोगों को अपने विचारों से, अपनी ध्यान पद्धतियों से और</p>

psychological violence - the inward anger, hatred, wanting to dominate people. Right? - not only physical domination, but the domination of ideas: I know, you don't know, I will tell you and you will obey. That is domination. I wonder if you follow all this. The gurus are violent, because they are dominating people with their ideas, with their system of meditation and all that business. Please understand this, we are not attacking gurus. They can jump in the lake or swim, whatever they want. But I am just pointing out what violence is, the psychological dependence, imitation, conformity, domination, all that is inward violence. That is a fact. Can we deal with the fact and not with the idea of the opposite, only deal with facts and there is no opposite. Right? There is an opposite as darkness and light, woman and man, tall and short, black and white and so on. There is a difference. But inwardly is there duality at all? You understand my question? Are we following each other? Or am I talking to myself?

इसी तरह की अन्य बातों से नीचा दिखाता हैं। कृपया इसे समझे। हम गुरुओं पर आक्रमण नहीं कर रहे हैं। मैं केवल मनोवैज्ञानिक निर्भरता, अनुकरण, अनुरूपता, नीचा दिखाना आदि को इंगित कर रहा हूँ, यह सब आन्तरिक हिंसा है। यही सच्चाई है। क्या हम सच्चाई के साथ कार्य कर सकते हैं न कि विरोधी धारणाओं के साथ? कोई भी चीज किसी की विपरीत नहीं होती। ठीक? हां अंधकार प्रकाश का विरीत है, पुरुष स्त्री का विपरीत है या इसी तरह की अन्य बातें हैं। परंतु आंतरिक रूप में क्या द्वैत है? सचमुच में हम यह प्रश्न पूछ रहे हैं कि क्या द्वैत है या केवल “सत्य है”? जो है वह यह है कि हम हिंसक हैं। तो क्या हिंसा से मुक्त होना संभव है, न कि अहिंसक होना? क्या यह स्पष्ट है? इस देश ने अहिंसा का बड़ा प्रचार किया है। हिंसक होते हुए भी इन लोगों ने ऐसी चीज का प्रचार किया है जो वे नहीं हैं। इसका मतलब कि हम धीरे-धीरे दिन प्रतिदिन अभ्यास करते हैं, हिंसा को समझते नहीं अपितु हिंसक बन जाते हैं। क्या आप इस अन्तर को देखते हैं? इसीलिए द्वंद्व हैं। जब मैं सच्चाई का अवलोकन करता हूँ, सीखता हूँ, इसकी जांच करता हूँ तो मेरे मन में द्वंद्व नहीं होता। परंतु यदि मेरा मन हर समय यही कर रहा है कि निश्चित रूप से मुझे अहिंसा को प्राप्त करना है तो वहां द्वंद्व होता है। परंतु यदि मैं यह कहता हूँ कि मैं हिंसक हूँ तो इस हिंसा का मूल क्या है? उसकी प्रकृति क्या है? तो मैं उसकी निन्दा नहीं करता। मैं उसका अवलोकन करता हूँ।

what we mean by observing. Now, when you observe the full moon, do you observe it, do you see the beauty of that light, see the grandeur, the extraordinary quality of that light, or you say yes, it is a full moon and you do something else. So what do we mean by observing? Do you ever observe the mountain with all that grandeur, the majesty, the snow cap and the deep valleys full of dark shadows, the extraordinary majesty of mountains. When you observe for a single moment, all your problems have gone, because the majesty of that has driven away all your problems, for a second. Have you noticed this? But the old problems come back immediately. So we are going to talk over together what does it mean to

अवलोकन क्या है? जब आप पूर्णिमा के चांद का अवलोकन करते हैं तो क्या आप उसे देखते हैं, तो क्या आप उस प्रकाश के सौन्दर्य को देखते हैं, उस प्रकाश के असाधारण गुण को देखिये, क्या आप यह कहते हैं कि यह पूर्णिमा का चांद है या और कुछ करते हैं? अवलोकन से आपका क्या अर्थ है? क्या आप हिमाच्छादित पहाड़ी का उसकी समस्त भव्यता एवं सौन्दर्य का अवलोकन करते हैं, क्या अंधेरी छायाओं से परिपूर्ण घाटियों का, पर्वत के असाधारण ऐश्वर्य का अवलोकन करते हैं? जब क्षण भर के लिए आप इनका अवलोकन करते हैं तो आपकी समस्त समस्याएं समाप्त हो जाती है, क्योंकि उस पर्वत की गरिमा एक सेकेण्ड के लिए ही सही आप की समस्त समस्याओं को दूर कर देती है। क्या आपने इस पर ध्यान दिया है? पर तत्क्षण आपकी समस्याएं पुनः वापिस आ जाती हैं। तो

observe.	हम लोग एक साथ मिलकर इस चीज पर बातचीत करने चल रहे हैं कि अवलोकन का क्या अर्थ है?
<p>Now, suppose I am violent. How do I observe that violence, because I want to understand the nature of that violence. I want to go, explore, discover the extraordinary factors that contribute to violence. So how do I observe? First, is violence - please listen to this - is violence different from me? Right? You understand my question? I am asking, is that violence which I see when I say I am violent, is that violence different from me or I am that violence? When you are angry, you are angry. It is not you are different from anger. You are different from anger only when you want to control it, only when you say I must suppress it, but are you actually different, separate from violence. Please, we must go into this very carefully because most people say I am different from that object which I call violence. Is that so? Is the word 'violence' separated - you understand? - through tradition, through constant talking about violence and so on, the word itself has created a separation from observation.</p>	<p>मान लीजिए कि मैं हिंसक हूँ तो मैं उस हिंसा का कैसे अवलोकन करता हूँ? मैं उस हिंसा की प्रकृति को समझना चाहता हूँ। मैं उन असामान्य कारणों का उद्घाटन करना चाहता हूँ, उसकी खोज करना चाहता हूँ जो हिंसा में योगदान देती हैं। मैं कैसे अवलोकन करता हूँ? पहली बात तो यह कि क्या हिंसा हमसे भिन्न है? क्या आप मेरे प्रश्न को समझते हैं? मैं पूछ रहा हूँ कि क्या वह हिंसा जिसे मैं देखता हूँ या जब मैं यह कहता हूँ कि मैं हिंसक हूँ तो वह हिंसा मुझसे भिन्न है या वह हिंसा में ही हूँ? जब आप क्रोधित होते हैं तो आप ही क्रोधित होते हैं। यह नहीं कि आप क्रोध से भिन्न है। आप क्रोध से तभी भिन्न होते हैं जब आप इस पर नियंत्रण करना चाहते हैं, केवल तभी आप यह कहते हैं कि “मुझे इसका निश्चित रूप से दमन करना चाहिए” पर क्या सचमुच में आप हिंसा से भिन्न या अलग होते हैं? क्या यह ऐसा है? क्या परम्परा ने अथवा हिंसा आदि के बारे में अनवरत की बातचीत में प्रयुक्त हिंसा शब्द ने अवलोकन से अलगाव पैदा किया है?</p>
<p>So, the observer says, I am different from that, I am different from violence. So we have to enquire who is the observer. Right? The observer is the past, who has known what violence is. It is the past, is the knowledge, is the experience, is all the stored up memories. Those memories, those various forms of knowledge and the movement of all that is the past. Thought has divided itself as the past, the present and the future - right? So thought has divided itself as the observer and the observed - right? Thought has said, I am not violent but violence is not part of me. But when you look at it very closely, you are violent, you are angry, you are greedy, envious, competitive, depressed, you are all that. Right? You are not the watcher. The observer is not different from that which he is observing - right? Please</p>	<p>अवलोकनकर्ता कहता है, मैं उससे भिन्न हूँ, मैं हिंसा से भिन्न हूँ। हमें इस चीज की जांच करनी है कि अवलोकनकर्ता कौन हैं। अतीत ही अवलोकनकर्ता है जिसे यह पता है कि हिंसा क्या है। यह अतीत है, यह ज्ञान है, यह अनुभव है, यह सभी स्मृतियों का संग्रह है। ये स्मृतियाँ, ये ज्ञान के अनेकों रूप और इसकी गति यह अतीत हैं। विचार ने स्वयं को अतीत, वर्तमान एवं भविष्य के रूप में विभाजित कर लिया है। विचार ने तो यह कह दिया कि “मैं हिंसक नहीं हूँ, हिंसा मेरा अंग नहीं है” परंतु जब आप इसे अत्यंत निकट से देखते हैं कि आप ही हिंसक हैं, आप ही क्रोधित है, आप ही लालची हैं, ईर्ष्यालु है, प्रतिस्पर्धालु हैं, दमित वासनाएं है यह सब कुछ आप ही हैं, ठीक अवलोकनकर्ता उस चीज से भिन्न नहीं है जिसका वह अवलोकन कर रहा है कृपया इसे समझें। यह बड़ा ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि आप सचमुच में इसे अपने हृदय से, अपने मन एवं मस्तिष्क से परिपूर्ण रूप से</p>

<p>understand. This is very important, because this will, if you really, truly understand this with your heart, with your mind, with all your being, conflict comes to an end, because there is no duality at all. Forget all your books, Vedanta and all the rest of it. The fact is there is no opposite except physically. Psychologically, inwardly there is only the fact. The fact is one is violent, angry, jealous, hatred and so on.</p>	<p>समझ लेते हैं तो द्वंद का अंत हो जाता है वहां द्वैत बिल्कुल ही नहीं रह जाता। भूल जाइये आप अपनी समस्त पोथियों को, वेदांत को और शेष सभी चीजों को। तथ्य यह है कि बाह्य के अतिरिक्त कही भी विपरीतता नहीं है। मनोवैज्ञानिक रूप से आन्तरिक रूप से केवल तथ्य हैं। तथ्य यही है कि हम हिंसक हैं, हिंसक है, ईर्ष्यालु है और इसी तरह की अन्य बातें हैं।</p>
<p>Now, to observe the fact without its opposite, which thought has invented - right? - do you see this? To observe what is. In that observation, the observer is the observed, the thinker is the thought - right? - the experiencer is the experience. But we have separated it. We are saying, I must experience enlightenment or I must experience whatever you want to experience. So the thinker is the thought. There is no thinker without thought. The observer is the observed, the analyser is that which he is analysing. I can't... I'll put it in ten different ways. But that is the fact. The observer is the observed. Therefore you eliminate altogether the sense of duality inwardly. Then there is no question of suppressing it, escaping from it, analysing. It is there. Then what takes place? You understand? Are we together at least a little bit, half of the way? What takes place when there is actually the realisation of this truth that there is, that there is only the fact, not the invented opposite, only that which is. In that, there is no division as the observer and the observed. Then what takes place? You understand? Have you ever done this or it is just all theories to you? Do you understand my question?</p>	<p>तो क्या बिना विपरीत के और उस तथ्य का अवलोकन कर सकते हैं जिसे विचार ने आविष्कृत किया है? क्या आप इसे देखते हैं क्या “जो है” उसका अवलोकन करते हैं? उस अवलोकन में अवलोकनकर्ता ही अवलोक्य है, विचारक ही विचार है, अनुभवकर्ता ही अनुभूति हैं। परंतु हमने इसे अलग कर दिया है। हम कहते हैं मुझे बुद्धत्व का अनुभव अवश्य करना चाहिए या उसे आप जो कुछ भी कहें जिसका आप अनुभव करना चाहते हैं। अतः विचारक ही विचार है। विचार के बिना विचारक नहीं होता। अवलोकनकर्ता ही अवलोक्य हैं। विश्लेषणकर्ता वही है जिसका वह विश्लेषण करता हैं। मैं इस बात को इस तरह के विभिन्न रूपों में रख सकता हूं, परंतु तथ्य यही है कि अवलोकनकर्ता ही अवलोक्य हैं। इस प्रकार आंतरिक रूप से एक ही साथ आप द्वैत से बोध का विलोपन कर देते हैं, तब वहां उसे दमन करने, उससे पलायित करने, उसका विश्लेषण करने का प्रश्न ही नहीं उठता। तब क्या होता है? जब वहां सचमुच में सत्य की अनुभूति हो जाती है तो क्या होता है, वहां केवल तथ्य होता है, आविष्कृत विपरीतता नहीं होती, केवल वही होता है “जो है”? उसमें अवलोकनकर्ता एवं अवलोक्य के रूप में कोई विभाजन नहीं होता। तब क्या होता है? क्या आप मेरा प्रश्न समझते हैं?</p>
<p>Man has lived in conflict from time immemorial. If you see those caves in France, in certain parts of the world, there is always the battle between the good and the bad, the good against the evil. Right? This has been the history of man - conflict. And we are asking if this conflict in man can end. Then he is a</p>	<p>अति प्राचीन काल से ही मनुष्य द्वंद में रहा हैं। यदि आप चट्टान पर बनी नक्काशियों या उन गुफाओं को जो फ्रान्स में और संसार के कुछ विशेष भागों में है उसे देखें, तो आप पायेंगे कि वहां सदा से अच्छे एवं बुरे के बीच, दुष्ट एवं सज्जन के बीच युद्ध होता रहा हैं। यही मनुष्य का इतिहास रहा है द्वंद। हम पूछ रहे</p>

human being, vital, creative - you understand? - he is something extraordinary. And when there is this realisation that which... that you are violent, not that you separate and violence is separate, you are that. You are brown, you have certain characteristics, you have troubles, you have... professor or a scientist, all that you are, all that is not separate from you. So what takes place when this fact, this truth is realised, not intellectually, not verbally but deep down as a fact, as truth, what takes place? Have you not eliminated altogether the opposite? There is only this. And to - please follow this a minute - and to live with that like a precious jewel that you have discovered and you are watching it, see the beauty of that jewel, the light, the facets, the many aspects of it as you are watching it, which is part of yourself. Therefore, the watching, observing is extraordinarily important so that there is no division whatsoever between the watcher and that which is watched. Then you realise nothing can be done about it. You are brown. You cannot change it. You've dark hair, you can't change it. Of course you can change it by various colours and so on, but the fact. When there is such observation, it is not the word, it is not the memory, it is something totally new. You are facing this new reaction which you have called violence anew. That is, have you observed anything anew? Have you seen the moon, the new moon that is coming up as though for the first time in your life? Have you looked at your wife or your husband as though for the first time? Have you? So to observe requires great enquiry, energy, vitality, to see actually what is.

हैं कि इस द्वंद्व का अंत हो सकता है या नहीं। यदि यह द्वंद्व समाप्त हो जाये तो मनुष्य सजीव सृजनात्मक और कुछ अद्भुत बन जाता है। जब इस बात की अनुभूति हो जाती है कि आप हिंसक है, आप और हिंसा अलग-अलग नहीं है अपितु आप वही है तो क्या होता है? आप गोरे हैं, आप के पास कुछ विशेष गुण हैं, आप कठिनाइयों में है, आप आचार्य है या वैज्ञानिक हैं यह सब आप से भिन्न नहीं हैं। क्या होता जब आप को इस तथ्य का, इस सत्य का अनुभव हो जाता है, बौद्धिक रूप से ही नहीं, शाब्दिक रूप में नहीं अपितु अत्यंत गहरे तथ्य के रूप में, सत्य के रूप में? तो क्या आप समस्त विपरीतताओं के साथ उसका उन्मूलन नहीं कर देते हैं? तब वहां केवल सत्य होता है एक बहुमूल्य रत्न की तरह, जिसको आप ने खोज लिया है। अब आप के साथ रहें, उसे ध्यान से देखते रहें, उस रत्न के सौन्दर्य को देखते रहें, उसके प्रकाश को उसके अनेक पहलुओं को ऐसे देखें कि वह आप का अंग हैं। अतः देखना, अवलोकन करना असाधारण रूप से महत्वपूर्ण है जिससे कि देखने वाले एवं देखी जाने वाली वस्तु के बीच कोई विभाजन न हो। तब आप यह अनुभव करते हैं कि इस संबंध में कुछ भी नहीं किया जा सकता। आप यदि काले है तो आप इसे बदल नहीं सकते। सत्य यह है कि जब ऐसा अवलोकन होता है तो वहां शब्द नहीं होता है, वहां स्मृति नहीं होती, वहां कुछ बिल्कुल ही नया होता है। तब आप एक बिल्कुल ही नई प्रतिक्रिया का सामना करते हैं जिसे आप हिंसा कहते हैं पुनर्नवा। इसका अर्थ है किसी चीज को नये सिरे से देखना। क्या आप ने चांद को देखा है? नया चांद जो अभी-अभी उदय हो रहा है जैसे कि यह आप के जीवन में प्रथम बार हो रहा है? क्या आपने अपनी पत्नी को, अपने पति को देखा है जैसे कि पहली बार देखते हैं? या आप केवल यह कह देते हैं कि यह मेरी पत्नी हैं, यह मेरे पति है बिल्कुल यंत्रवत अवलोकन? अवलोकन करने के लिए सचमुच में “जो है” उसे देखने के लिए बड़ी छानबीन, बड़ी ऊर्जा एवं ओजस्विता की आवश्यकता पड़ती है।

So we are now concerned with the elimination of altogether, of all kinds of conflict. That is, why do we have opinions? You understand my question? You have opinions, haven't you?, Judgments, why? Enquire into this. Why do

अभी हम लोग सभी तरह के द्वंद्वों को मिटाने में लगे रहे हैं। तब हम पूछ रहे हैं कि हमारे पास सम्मतियां क्यों होती है? आप के पास सम्मतियां हैं, निर्णय है क्या नहीं है? कृपया अपने भीतर इसकी जांच करें।

<p>you carry opinions? It is a burden. I am a Brahmin, you are not. I am a Sikh, you are not. I am a Muslim, you are not - you follow? - why these opinions? It indicates a mind that is or a brain which is so crowded with opinions, it is becoming small, petty, narrow. It is not free to enquire, look.</p>	<p>आप सम्मतियां क्यों ढोते हैं? यह तो एक प्रकार का बोझ है। मैं ब्राह्मण नहीं है। मैं सिक्ख हूं आप सिक्ख नहीं है, मैं मुसलमान हूं आप मुसलमान नहीं है। आप इस तरह के विचारों को क्यों रखते हैं? यह इस बात की ओर संकेत करता है कि इतने विचारों की भीड़ से भरा मन और मस्तिष्क छोटा क्षुद्र और संकीर्ण होता जाता है। वह जांच करने एवं देखने के लिए मुक्त नहीं होता।</p>
<p>So we must go into this question why human minds, human brain is always occupied, never free, never quiet. You are practising quietness - you follow? (Laughs) That is your meditation. It is like a pianist practising the wrong note. You understand this? So enquire into all this. Please, because we are reaching a crisis or we have a crisis in the world, tremendous crisis, and also crisis in our consciousness, in us.</p>	<p>मनुष्य का मन, मानव मस्तिष्क हर समय क्यों व्यस्त रहता है कभी स्वतंत्र, कभी शांत क्यों नहीं होता? इन सबकी जांच करिए क्योंकि दुनिया में प्रचण्ड रूप से विद्यमान है और हमारी चेतना पर भी विद्यमान हैं।</p>
<p>And we also should talk over together as we talked yesterday, that life is a process of relationship. Why in our relationship with each other, however intimate, sexual, however very close, why there is conflict? Why two people cannot live peacefully? Have you ever asked that question? Why? Because this is very important. If I don't know how to live peacefully with my wife, with my husband, with my girlfriend, whatever you like, I cannot live peacefully in the world. I may talk about peace, I may write a great deal about peace, go all over the world talking about peace but I am quarrelling with my wife or with my husband. So there is conflict in our relationship, why? Please enquire. Do you want me to tell you, or are you inquiring with the speaker? See the difference. You are waiting - actually the truth - you are waiting for me to tell you. But if you are really inquiring, it is a sharing, a moving together. So we will go into it. We are thinking together. That is so important. Not agreeing together but thinking, step by step, going together, like walking hand in hand down a lane where there is so much beauty, love and</p>	<p>हमें एक साथ मिलकर संबंधों की भी बात कर लेनी चाहिए। हमारे आपसी संबंधों के बीच, चाहे कितनी ही आत्मीयता क्यों न हो, कितनी ही निकटता क्यों न हो, कामवासना का ही संबंध क्यों न हो फिर भी वहां द्वंद्व क्यों होता है? दो लोग मिलकर शांति पूर्वक क्यों नहीं हर सकते? क्या आपने कभी यह प्रश्न पूछा है? क्योंकि यह बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। यदि मैं यह नहीं जानता कि मुझे अपनी पत्नी, अपने पति अपनी बालिका मित्र के साथ शांतिपूर्वक कैसे रहा जाता है तो मैं दुनिया में शान्तिपूर्वक नहीं रह सकता। मैं शांति की बात कर सकता हूं, बड़े श्रम से मैं शांति के बारे में कुछ लिख सकता हूं दुनिया भर में जाकर शांति की बात कर सकता हूं परंतु मैं अपनी पत्नी या पति से साथ झगड़ता रहता हूं। अतः हमारे संबंधों में द्वंद्व हैं। क्यों? क्या आप चाहते हैं कि मैं आप से इसके संबंध में कुछ कहूं आप वक्ता के साथ इसकी छानबीन कर रहे हैं? यदि आप सचमुच में इसकी छानबीन कर रहे हैं तो यह एक प्रकार की सहभागिता है साथ-साथ चलना है, साथ-साथ सहमत होना नहीं अपितु एक-एक कदम पर सोचना, साथ-साथ ऐसे चलना जैसे कि हाथ में हाथ लिए हम एक गली में अहल रहे हों जहां अत्यधिक सौन्दर्य है, प्रेम है और अनुराग हैं। मनुष्य-मनुष्य के बीच, स्त्री और पुरुष के बीच हमारे संबंधों में यह विरोध, यह विभाजन क्यों है? क्या आप</p>

affection. Why is there this dissension, this division between man and man, and woman and man, in our relationship? Have you noticed, they are like two parallel lines never meeting. You may sleep with your wife or with your husband, or is that not mentioned publicly? Would you kindly tell me? Is it not mentioned publicly? In this country it is a kind of hidden, secret, keep it closed, don't talk about it. Everybody shies away from it, not from the act, but talking, looking. (Laughter) We are such hypocrites! We never say what we mean and stick to what you mean. We waffle.

So we are going to find out together why in human relationship we have such desperate, lonely, ugly, conflicts. I am not married - suppose I am married. I have my ambition, my desires, my problems. In my office I am competitive, aggressive. I am pursuing my own direction and the wife also is pursuing her own - right? - ambitious or not ambitious, too docile and I dominate and she resists it. You know, the whole game. So we are asking, why is there this conflict, because we two have to live together. We have sex, we have children but we two are separate. Right? Isn't it a fact? Isn't it? I dominate her or she dominates me, she bullies me or I bully her, I scold her or she scolds me. And I don't beat her but I am angry with her. I like to beat her but I am little more controlled. (Laughter) Yes, sir, you laugh, this is all facts. But I am an individual, she is an individual. Each must have his own ways, sexually, in habits, in our desires. How can two people live together like that? Which means you have no love at all for your wife or your husband.

Do you know what it means to love another? Have you ever loved anybody? Is love dependence? Is love desire? Is love pleasure? I don't love my wife. She doesn't love me. We are two separate individuals. We may meet sexually but otherwise we carry on our own particular way. Do you understand, sir? Does love exist in this country? Don't say does it

को यह सब पता है? हम लोगों का जीवन उन दो समानान्तर रेखाओं की तरह है जो आपस में कभी नहीं मिलती। हम यह कभी नहीं कहते कि हम कितने क्षुद्र हैं, परंतु उसी में लगे रहते हैं। हम मिलजुल कर पता लगाने चल रहे हैं कि मानवीय संबंधों में, हम लोगों में, इतनी निराशा और अभद्र द्वंद्व क्यों है? मेरे पास अपनी महत्वाकांक्षा है, अपनी वासनाएं हैं, अपनी समस्याएं हैं। अपने कार्यालय में मैं प्रतिस्पर्धालु होता हूँ, आक्रामक होता हूँ। मैं अपनी दिशा में प्रयत्नशील होता हूँ तथा मेरी पत्नी अपनी महत्वाकांक्ष के लिए प्रयत्नशील होती है, मैं उस पर प्रभुत्व जमाता हूँ वह उसका विरोध करती हैं। अतः मैं पूछ रहा हूँ कि यह द्वंद्व क्यों है जबकि हम दोनों को साथ-साथ रहना है। हमारी अपनी कामवासना है, बच्चे है फिर भी हम अलग-थलग बने रहते हैं क्या यह सब सच नहीं हैं? मैं उस पर प्रभुत्व जमाता हूँ वह मुझ पर प्रभुत्व जमाती हैं। मैं उसे भला न पीटू पर मैं उस पर क्रोधित तो होता हूँ। मैं उसे पीटना चाहता हूँ पर मैं थोड़ा बहुत नियंत्रित होता हूँ। आप हंसते हैं पर यह सब सच हैं। मेरी एक अलग सत्ता है उसकी एक अलग सत्ता है। प्रत्येक में यह चीज निश्चित ही अपने ढंग से हैं आदतों के रूप में, वासनाओं के रूप में। तब दो लोग कैसे एक साथ रह सकते हैं? इसका अर्थ है आपके पास अपनी पत्नी या अपने पति के लिए प्रेम नहीं है?

क्या आप जानते हैं कि एक दूसरे से प्रेम करने का अर्थ क्या है? क्या आपने किसी से प्रेम किया है? क्या प्रेम परस्पर निर्भर है? क्या प्रेम वासना है? क्या प्रेम सुख है? मैं अपनी पत्नी से प्रेम नहीं करता, वह मुझसे प्रेम नहीं करती। हम दोनों की सत्ता पृथक् हैं। कामवासना के समय हम एक दूसरे से मिलते हैं। अन्यथा हम अपने ही ढंग से चलते रहते हैं। क्या

exist in Europe. When I am in Europe, when the speaker is in Europe, he talks about it. But we are talking about it here as we are in this country, in this part of the world. Is there love in this country? Do you love anybody? Can love exist with fear, when each one is becoming something? I am becoming a saint and she is not, or she is becoming a saint, I am not, when each one is becoming something. You understand? Please understand all this. It is your life. And when each one is becoming something, how can there be love?

So what will you do? Do you understand my question? I have talked about it. What will you do? Get up and go home and forget all about it? Or, will you enquire, if it is possible to love another without wanting a single thing from another, neither emotionally, physically, in any way, not ask my wife for anything - psychologically. She may cook my meal, I may bring money. I am not talking of that. But inwardly, love cannot exist where there is attachment. If you are attached to your guru, you are not loving, there is no love in your heart. So this is very, very serious. Without love, there is no right action. When there is love whatever you do is right action. We talk about action. We do social kind of... social work. But when there is love in your heart, in your eyes, in your blood, in your face, you are a different human being. Whatever you do then has beauty, has grace, is a right action. All this may be excellent words you hear. But what will you... will you have this quality? It cannot be cultivated, it cannot be practised, it cannot be bought from your guru, from your... from anybody. But without that, you are dead human beings. So what will you do? Sir, please do ask this question, find out for yourself why this flame does not exist in you, why you have become such paupers. You see, unless we put our house in order, our house, which is ourselves, there will be no order in the world. You may meditate for the rest of your life. Without that, your meditation has no meaning.

आप समझते हैं श्रीमान? क्या इस देश में प्रेम का अस्तित्व है? यह मत पूछिए कि क्या योरप मे इसका अस्तित्व है? जब वक्ता योरप में होता है तो वह वहां भी इसके बारे में बात करता हैं। पर हम इसके बारे में यहां उसी तरीके से बात कर रहे हैं जैसे इस देश में रहते हैं, दुनिया के इस भाग में रह रहे हैं। क्या इस देश में प्रेम है? क्या आप किसी से प्रेम करते है? क्या भय में प्रेम का अस्तित्व हो सकता है, जबकि प्रत्येक कुछ-न-कुछ बन रहा है? क्या प्रेम तभी होता है जब मैं साधु होता हूं और वह नहीं होती या वह साधु होती है और मैं नहीं होता या जब प्रत्येक साधु होते हैं? कृपया यह सब समझिये। यह जीवन आप का हैं। जब प्रत्येक कुछ होने को है तो प्रेम कैसे हो सकता है? क्या दूसरे से कोई भी चीज चाहे बिना उससे प्रेम करना संभव है? चाहे भावावेश में या शारीरिक रूप से चाहे किसी भी तरह अपनी पत्नी से किसी भी चीज के लिए न कहना? मनोवैज्ञानिक रूप से वह हमारी आवश्यकता का ध्यान रख सकती है वह इसलिए कि मैं धन कमा कर लाता हूं। मैं इसकी बात नहीं कर रहा हूं अपितु आंतरिक रूप से, जहां आसक्ति होती है वहां प्रेम नहीं होता। यदि आपको अपने गुरु में आसक्ति होगी तो आपके हृदय में प्रेम नहीं होगा। यह बहुत ही गंभीर बात हैं। बिना प्रेम के सम्यक कर्म नहीं होता। हम सब कर्म की बात करते हैं। हम अनेकों समाजिक कार्य करते हैं। परंतु जब आपके हृदय में, आपकी आंखों में, आपके रक्त में, आपके चेहरे पर प्रेम होता है तब दूसरे ही व्यक्ति होते हैं। तब आप जो कुछ भी करते हैं उसमें सौन्दर्य होता है, अनुग्रह होता है वही सम्यक् कर्म हैं। जो कुछ आप सुन रहे हैं यह सब अति सुंदर शब्द हो सकते हैं, परंतु क्या आपके पास यह गुण है? ऐसे गुण का परिष्कार नहीं किया जा सकता उसका अभ्यास नहीं किया जा सकता, यह आपके गुरु से भी नहीं मिल सकता, यह कहीं से भी नहीं प्राप्त हो सकता। परंतु इसके बिना आप एक मृत मानव हैं। तो आप क्या करेगे? कृपया यह प्रश्न पूछें और स्वयं यह पता लगायें कि ऐसी ज्योति हममें क्यों नहीं है जब तक वहां व्यवस्था नहीं होगी तब तक दुनिया में कहीं व्यवस्था नहीं होगी। आप अपने शेष जीवन में ध्यान कर सकते हैं पर उसके बिना आप के ध्यान का कोई मतलब नहीं हैं। अतः अत्यधिक आदरपूर्वक हम यह पूछ रहे हैं कि इसके प्रति आपका प्रति उत्तर क्या है?

<p>So, please, most respectfully we are asking, what will you do after hearing all this, what is your response?</p>	
<p>Q: Well, sir, you have been talking about radical change for the last 50 years and I wonder sometimes there is obviously there is not any radical change in this world.</p>	<p>श्रोता: श्रीमान आप पिछले पचास वर्षों से मौलिक परिवर्तन की बात कर रहे हैं और निश्चित रूप से अब तक दुनिया में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं हुआ है। आप से मेरा प्रश्न यह है कि तब आप क्यों इसकी बात करते हैं?</p>
<p>Yes. The gentleman asks you have talked probably over 50 years, you have talked about fundamental change of human consciousness and so on and so on for the last 50 years and more and there is no change at all. Then the question is: why do you talk? I am not, the speaker is not talking for his amusement, for his fulfilment, for his encouragement, or if he didn't talk, he wouldn't be depressed, he wouldn't feel lacking something. The speaker has tried not to talk for a year. Therefore, why do I talk? You understand? Have you ever asked why the lotus blooms? Have you ever asked it? Have you, sir? Have you ever asked a flower why it grows, why it has so much beauty, why it has such marvellous colour, the depth and the smell and the glory of a simple flower? Or, the speaker may be talking out of compassion. May be, but he is not talking for his self fulfilment.</p>	<p>कृष्णमूर्ति: वह भद्र पुरुष यह पूछता है कि आपने मानव चेतना के मौलिक परिवर्तन की बात की है और पिछले पचास या उससे अधिक वर्षों से इसकी बात करते आ रहे हैं फिर भी अब तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। तब प्रश्न यह है कि आप इसकी बात ही क्यों करते हैं? वक्ता अपने अमोद-प्रमोद के लिए, अपनी परिपूर्णता के लिए, अपने समर्थन के लिए बातचीत नहीं कर रहा है। यदि वह बातचीत नहीं करता तो भी वह उदासी का अनुभव नहीं करता, वह किसी चीज से अभाव का अनुभव नहीं करता। फिर भी मैं क्यों बात करता हूँ? क्या आप ने कभी कमल से पूछा है कि वह क्यों खिलता है? क्या आपने पूछा है श्रीमान? क्या आपने कभी पूछा है कि मनुष्य क्यों जीते हैं। उनके पास इतना सौन्दर्य क्यों है, उनके पास इतना अद्भुत रंग क्यों है एक साधारण से पुष्प में इतनी कोमलता इतनी सुगंध और इतना गौरव क्यों हैं? हो सकता है वक्ता करुणा के कारण बातचीत कर रहा हो।</p>
<p>J. Krishnamurti Second Public Talk in New Delhi 31 October 1982</p>	<p>माइण्ड विदाउट मेज़र ३१ अक्टूबर, १९८२</p>
	<p>अनुवादक : डॉ महादेव राम विश्वकर्मा</p>
	<p>एकाग्रता</p>
<p>Question: I have to study a boring book. I don't find any interest in it, yet I cannot but study it. How am I to create an interest in it?</p>	<p>प्रश्न मुझे अरुचिकर पुस्तकों का अध्ययन करना पड़ता है। मुझे उन पुस्तकों में कोई रुचि नहीं है फिर भी उनका अध्ययन करता हूँ उन्हें छोड़ नहीं सकता। मैं उनके अध्ययन में कैसे रुचि पैदा करूँ?</p>
<p>Krishnamurti: How can you create interest, sir,</p>	<p>कृष्णमूर्ति श्रीमान् यदि आप किसी चीज में रुचि</p>

<p>if you are not interested in something? How falsely we think about life; Your parents send you to a University, to a College. They never enquire, nor do the teachers and the professors enquire, about your true vocation, your true interests. Because of political, economic and social conditions, you are pushed in a particular groove, you are forced to become a mathematician, when you are really interested in painting and so, you say `How am I to be interested in mathematics?'</p>	<p>नहीं ले रहे हैं तो आप कैसे उसमें रुचि पैदा कर सकते हैं? हम जीवन के बारे में कितना झूठमूठ का विचार करते हैं। आपके माता-पिता तो आपको विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में भेज देते हैं। वे कभी नहीं पता करते, न तो आप के माता-पिता, न ही शिक्षक, न ही आचार्यगण। आप की सही योग्यता एवं सही अभिरुचि के बारे में छानबीन नहीं करते हैं, वरन् राजनैतिक आर्थिक और सामाजिक संस्कारों द्वारा आप एक विशेष खांचे में ढकेल दिए जाते हैं। आपसे गणितज्ञ बनने के लिए ज़बरी की जाती है जबकि सही माने में आपकी अभिरुचि चित्रकारी में है, और इस प्रकार आप पूछते हैं “गणित में मेरी अभिरुचि कैसे हो?”</p>
<p>In a country where there is overpopulation, innumerable economic, social and religious conditioning, it is almost impossible to break away and do what one really wants to do. But, to find out what one wants to do, to discover the capacity of each one, is extremely difficult. That requires a total revolution in our educational process, does it not? Because most of us here are trained to be alike, we are not able to do anything for which we have the capacity or the inclination, and so most of us become low paid clerks.</p>	<p>ऐसे देश में जहां जनसंख्या का आधिक्य है जहां अनेकों आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक संस्कार है वहां इन चीजों को तोड़ पाना और वास्तव में कोई जो कुछ करना चाहता है उसे कर पाना लगभग असंभव है। कोई क्या काना चाहता है प्रत्येक की क्षमता की खोज करना यह तो अत्यंत ही कठिन है। इसके लिए हमारी क्षैक्षिक प्रक्रिया में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है, क्या ऐसा नहीं है? क्योंकि हममें से अधिकांश यहां एक दूसरे जैसा बनने के लिए प्रशिक्षित हैं। जिस चीज को करने की हमारे में क्षमता है या जिसे करने में हमारा रुझान है ऐसी किसी भी चीज को करने के योग्य हम नहीं “हो पाते” और यही कारण है कि हममें से अधिकांश निम्न वेतन भोगी लिपिक बन जाते हैं।</p>
<p>Interest in a book is not possible, because you have not found your own true vocation. I think it is far more important to live creatively than to pass examinations, than to have a few degrees. I think it is much better to starve, if necessary, doing what one wants to do than being compelled to do what one loathes. Because, when one does under compulsion what one loathes, then one destroys the mind; life then becomes a rotten, ugly thing, like the life which most of us are leading.</p>	<p>किसी पुस्तक में रुचि उत्पन्न करना संभव नहीं है क्योंकि आपने अपनी योग्यता का सही पता नहीं लगाया है। मेरी समझ में सर्जनशील जीवन जीना, कुछ परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने की अपेक्षा, कुछ उपाधियां प्राप्त करने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। मेरी समझ में कोई जो कुछ करना चाहता है आवश्यकता पड़ने पर उसके बदले उस कार्य को ज़बरन करना जिससे वह घृणा करता है, भूखों मर जाना अच्छा है। क्योंकि जब कोई ज़बरी उस कार्य को करता है जिसे वह घृणा करता है तब वह मन को विनष्ट करता है, तब जीवन सड़ा गला एवं अशोभन हो जाता है जैसा जीवन की हममें से अधिकांश लोग जी रहे हैं।</p>
<p>Question: What is your opinion on</p>	<p>प्रश्न एकाग्रता सुष्मना और चक्रों तथा ऊं के बारे</p>

<p>concentration, on Sushumna and the Chakras, and on Om? These are mentioned in books regarded by us as most authoritative, although perhaps not read by yourself. The Tantras contain an enormous amount of information on individual mantras, individual Pranayama, yantras, etc, as a means of realization. All this is practically forgotten in modern India but is known to a few Gurus who remain hidden. What is your esteemed opinion about this?</p>	<p>में आप की क्या राय हैं? हमारी सम्मानित पुस्तकों में इन सब चीजों को अत्यधिक प्रामाण्यों के रूप में अंकित है, फिर भी आपने इन सब चीजों का अध्ययन नहीं किया है। इन में संबोधि-प्राप्ति के साधन के रूप में तंत्रों, वैयक्तिक मंत्रों वैयक्ति प्राणायामों एवं यंत्रों आदि के बारे में अत्यधिक मात्रा में सूचनायें हैं। आधुनिक भारत में इनकी व्यवहारिकता भुला दी गई है, परंतु मैं कुछ गुरुओं को जानता हूं जो छिपे तौर पर विद्यमान हैं। इसके बारे में आप की आत्यन्तिक राय क्या है?</p>
<p>Krishnamurti: Concentration? Fixing the mind, in a particular puja, on an idea, giving full attention to it?</p>	<p>कृष्णमूर्ति “एकाग्रता” किसी विशेष प्रकार की पूजा या विचार मन को केन्द्रित करना उस पर पूरा ध्यान देना यही है न?</p>
<p>If there is any form of compulsion, any form of effort in concentration, is that concentration? Is it concentration when there is any form of exercising will in order to concentrate? In that process of doing the puja on which you concentrate, there is the entity that concentrates, that says 'I must concentrate.' So, there is a dual process, is there not? Perhaps, this is a little out of the way and I hope you don't mind my discussing this, my going into this question because, it seems to me, we have a wrong formulation of what is concentration. If I concentrate on reading a book which I find boring but through which, I think, I am going to get a result or success, is that concentration? In that, is there not a dual process in operation, the concentrator and the thing upon which he concentrates? In this dual process, is there not a conflict between the concentrator and the thing upon which he concentrates? If there is any form of effort, to push away other forms, to control the mind so that it will concentrate on one particular idea or series of ideas, is that concentration or something entirely different?</p>	<p>यदि एकाग्रता में किसी प्रकार की अनिवार्यता हो, किसी प्रकार का प्रयास हो तो क्या वह एकाग्रता है? जब एकाग्रता के लिए किसी प्रकार की इच्छा जनित अभ्यास किया जाता है तो क्या वह एकाग्रता है? पूजा करने की उस प्रक्रिया में जिस पर आप ध्यान केन्द्रित करते हैं वहां उसका अस्तित्व होता है जो ध्यान केन्द्रित करता है, जो कहता है “मुझे अवश्य ध्यान केन्द्रित करना चाहिए”। अतः वह द्वैत की प्रक्रिया है क्या नहीं है? शायद यह बात कुछ विषयान्तर हो रही है फिर भी मुझे आशा है कि मेरी इस तरह की चर्चा में, मेरे इस तरह के प्रश्न में जाने को आप बुरा नहीं मानेंगे, क्योंकि मुझे ऐसा दिखाई पड़ता है कि हमारे पास एकाग्रता का जो सूत्र है वही गलत हैं। यदि मैं इस पुस्तक पर अपना ध्यान केन्द्रित करता हूं जो मुझे उबाऊ लगती है, परंतु मैं सोचता हूं कि उसके द्वारा मैं कोई परिणाम या सफलता प्राप्त करने जा रहा हूं तो क्या यह एकाग्रता है? क्या वह द्वैत की प्रक्रिया नहीं है, जिसमें एकाग्रकर्ता है एवं वह चीज भी है जिस पर वह ध्यान केन्द्रित करता है? जहां पर मन को नियंत्रित करने का किसी प्रकार का प्रयास है, किसी प्रकार का दबाव है, जिससे कि वह किसी विशेष विचार या विचारों की श्रेणियों पर ध्यान एकाग्र करे तो क्या यह एकाग्रता है या एकाग्रता कोई बिल्कुल ही भिन्न चीज है।</p>
<p>In the usual concentration which we know, one part of the mind can concentrates on another</p>	<p>सामान्यतया जिसे हम एकाग्रता कहते हैं उसमें मन का एक भाग दूसरे भाग पर जो कि विचार है, संकेत है</p>

<p>part which is an idea, which is a symbol - an image and so on. In that process, various other parts of the mind come and interfere and so, there is constant conflict going on, the straying of the mind as it is called. Is it possible not to create this conflict but to be total attentive, to be completely one with the thing that you are meditating upon and to really understand?</p>	<p>एक दृष्टिकोण है ध्यान केन्द्रित करता हैं। उस प्रक्रिया में मन के अनेकों दूसरे भाग आते हैं और उसमें व्यक्तिक्रम उत्पन्न करते हैं जिसमें अनवरत द्वंद्व चलता रहता है इसे मन का भटकना कहते हैं। क्या इस द्वंद्व का उत्पन्न न होना संभव है तथापि जिस चीज पर आप ध्यान कर रहे हैं उस पर परिपूर्ण रूप से सावधान हो और उसे सचमुच में समझते हो?</p>
<p>It is important to find out the meditator and to understand the meditator, not the thing upon which it meditates or concentrates but the meditator himself because this whole question is concerned with the meditator, not the thing upon which it meditates. If one goes really deeply into the question, we only know that the meditator is meditating upon something and in his attempt to meditate there is a constant conflict, constant control, constant battle going on between the meditator and the thing upon which he meditates. When there is the understanding of the ways of the meditator not only at the conscious level but also at the deeper levels of consciousness it is possible to find out the truth. Truth cannot be found when there is the separation and then the control of the one over the other. It can be found only when the mind is utterly still, not through any form of compulsion, discipline; and the mind cannot be still as long as there is the meditator as a separate entity who is always seeking, searching, gathering, denying.</p>	<p>ध्यानी कौन है उसका पता लगाना और उसे समझना अधिक महत्वपूर्ण है न कि उस चीज का जिस पर वह ध्यान करता है या जिस पर वह एकाग्रता साधता हैं। अपितु स्वयं ध्यानी का क्योंकि इस सम्पूर्ण प्रश्न का संबंध ध्यानी से है न कि उस चीज से जिस पर ध्यान करता हैं। यदि सही माने में कोई इस प्रश्न की गहराई में जाय तो वह केवल यही जान पाता है कि ध्यानी जिस चीज का ध्यान कर रहा है उसके बीच सतत् द्वंद्व, सतत् नियंत्रण एवं सतत् युद्ध चल रहा हैं। जब तक ध्यानी की आकांक्षा को केवल चेतन स्तर पर ही नहीं अपितु चेतना के अत्यंत गहरे तल पर समझा जा रहा है तभी सत्य का पता लगाना संभव हैं। जब तक ध्यानी एवं उस चीज के बीच जिस प्रकार वह ध्यान कर रहा है अलगाव है और एक दूसरे पर नियंत्रण है तब तक सत्य को नहीं प्राप्त किया जा सकता। वह केवल तभी पाया जा सकता है जब मन बिल्कुल शांत हो, वह शांति किसी अनिवार्यता के रूप में, किसी अनुशासन के रूप में न हो। और यह मन तब तक शांत नहीं हो सकता, जब तक कि उस ध्यानी का एक अलग अस्तित्व है जो उस समय कुछ दूँड रहा है, कुछ खोज रहा है, कुछ एकत्र कर रहा है और कुछ को अस्वीकार कर रहा हैं।</p>
<p>Really, this question, being very complicated and subtle, should be discussed very carefully, and not answered or passed off in a few of minutes. There is no answer, but only the problem. The answer lies in understanding what the problem is; but most of us, unfortunately, want to find the answer 'yes' or 'no,' and we listen with that attitude. But if we can put away that attitude and merely concern ourselves with the problem, then, there is real concentration without any effort. There may be</p>	<p>सचमुच में यह प्रश्न बड़ा जटिल है और सूक्ष्म होता जा रहा है, इस पर बड़ी सावधानी से विचार करने की आवश्यकता है न कि इसका कुछ उत्तर दे देना, या इस पर कुछ समय व्यतीत कर लेना। उत्तर कोई भी नहीं होता, होती है केवल समस्या। समस्या की समझ में ही उत्तर निहित होता हैं। परंतु दुर्भाग्यवश हममें से अधिकांश “हां” या “ना” में उत्तर का पता लगाना चाहते हैं और इसी दृष्टिकोण से हम किसी को सुनते भी हैं। परंतु हम उस दृष्टिकोण को छोड़ दे और अपना संबंध केवल समस्या से ही रक्खें तो वहां-वहां बिना किसी प्रयास के एकाग्रता होती हैं। एकाग्रता की</p>

<p>so many methods of concentration, advocated by others; but they are all bound to be leading nowhere.</p>	<p>अनेक विधियां हो सकती है जिसकी अन्य लोगों ने वकालत की है, परंतु वे सभी विधियां कहीं भी नहीं ले जाने के लिए बाध्य हैं।</p>
<p>We have to understand the whole process of the entity who concentrates. Meditation is the understanding of the meditator. Only in such meditation is it possible for the mind to go beyond itself and not be caught in the illusion of its own projection.</p>	<p>हमें एकाग्रता करने वाले के अस्तित्व की सम्पूर्ण प्रक्रिया को समझना है। ध्यानी को समझना ही ध्यान है। केवल ऐसे ही ध्यान में यह संभव है कि मन स्वयं के पार चला जाय और स्वयं के द्वारा प्रक्षेपित भ्रान्तियों की पकड़ में न आ सके।</p>
<p>Question: The burning question of our time is war. You suggested that war can be avoided if individuals are integrated in themselves. Is this integration of the individual possible? As far as I know, there is no such individual. Even the best institutions like the League of Nations and the U.N.O. have been rendered ineffective by the egotistic self-interest of individuals or groups.</p>	<p>प्रश्न हमारे समय की ज्वलंत समस्या है युद्ध। आपने एक सुझाव दिया था कि यदि व्यक्ति स्वयं में अखण्ड हो तो युद्ध से बचा जा सकता है। तो क्या ऐसी अखण्डता प्रत्येक व्यक्ति के लिए संभव है? जैसा कि मैं जानता हूँ कि ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है। जब कि राष्ट्रों का संघ और यू. एन. ओ. जैसी अच्छी संस्थाओं ने भी व्यक्तिगत या समूहगत अहंकारपूर्ण आत्मअभिरुचि से आगे अपनी निष्फलता अर्पित कर चुका है।</p>
<p>Krishnamurti: The question is: is integration possible? What do we mean by integration? Integration between the various processes of our thinking, of our doing, of our consciousness; integration between hatred and love, between envy and generosity, between the various cleavages, between the various components in our total make up - is that what we mean by integration? Or is integration something entirely different?</p>	<p>कृष्णमूर्ति प्रश्न यह है कि क्या अखण्डता संभव है? आप अखण्डता से क्या समझते हैं? हमारी विचारणा की विभिन्न प्रतिक्रियाओं के बीच अखण्डता, हमारी क्रियाओं में अखण्डता, हमारी चेतना में अखण्डता, घृणा एवं प्रेम से बीच अखण्डता, ईर्ष्या एवं उदारता के बीच अखण्डता, विभिन्न दरारों के बीच अखण्डता, हमारी सम्पूर्ण संरचना से विभिन्न अंगों के बीच अखण्डता क्या अखण्डता से हमारा यही तात्पर्य है? या अखण्डता पूर्णतः कोई चीज है?</p>
<p>Now, we think in terms of changing hate into love. Is that possible? If I hate, which is important: that I should love, or that I should understand what is hatred? Is it not important for me to understand the whole process of hate, not the ideal of love? If I am envious, what is important is not to be free from envy, not to have the ideal of love or of generosity and so on, but to understand the whole process of envy. The understanding of 'what is' is more important than 'what should be'. If I am stupid,</p>	<p>हम घृणा को प्रेम में बदल देने की भाषा में सोचते हैं। क्या यह संभव है? यदि मैं घृणा करता हूँ तो कौन सी चीज महत्वपूर्ण है? मुझे प्रेम करना चाहिए या हमें यह समझना चाहिए कि घृणा क्या है? क्या मेरे लिए यह महत्वपूर्ण नहीं है कि हम घृणा की सम्पूर्ण प्रक्रिया को समझे न कि प्रेम के आदर्श को? यदि मैं ईर्ष्यालु हूँ तो क्या यह महत्वपूर्ण नहीं है कि हम ईर्ष्या से मुक्त हों, यह नहीं कि प्रेम या उदारता आदि के आदर्श रक्खें, अपितु ईर्ष्या की सम्पूर्ण प्रक्रिया को समझे। “जो है” उसे समझना “जो होना चाहिए” की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है? यदि मैं मूढ़ हूँ तो यह समझना अधिक</p>

<p>it is very important to understand that I am stupid, to know that I am stupid, not how to arrive at cleverness. The moment I understand the whole problem of how stupidity comes into being, then, naturally, there will be intelligence.</p>	<p>महत्वपूर्ण है कि मैं मूढ़ हूँ यह नहीं कि प्रज्ञा तक कैसे पहुंचे। जिस क्षण आप सम्पूर्ण समस्या को समझ लेते हैं कि मुढ़ता कैसे आती है तो स्वभावतः वही प्रज्ञा होगी।</p>
<p>So, is integration to be brought about by the dual process involved in our thinking, or does integration come into being only when `what is' is understood without any concern for `what should be'? Integration takes place only when I understand what I am actually - not what I am according to Sankara, Buddha, or any modern psychologist, or a communist. That actuality I can find out only in my relationship of dual existence, the way I talk to people, the way I treat people, my ideas as I have them.</p>	<p>तो क्या अखण्डता हमारी विचारणा से जुड़ी द्वैतवादी प्रक्रिया द्वारा लायी जाती है या अखण्डता का अस्तित्व केवल तभी होता है जब “क्या होना चाहिए” से संबंध बनाये बिना “जो है” उसे समझ लिया जाय? अखण्डता केवल तभी आती है जब मैं यह समझ लेता हूँ कि सचमुच में मैं क्या हूँ यह नहीं कि शंकर, बुद्ध अथवा आधुनिक मनोवैज्ञानिकों या साम्यवादियों के अनुसार मैं क्या हूँ। उस वास्तविकता का पता मैं केवल अपने दोहरे व्यक्तित्व में ही कर सकता हूँ, जिस तरह मैं लोगों से बात करता हूँ, जिस तरह मैं लोगों से व्यवहार करता हूँ, उनके बारे में जैसे मेरे विचार है आदि।’</p>
<p>Life is, after all, a mirror in which I can see myself in operation. But we cannot see what is actually taking place because we want to be something totally different from what we are. I think integration is possible only when I see what I am actually, without the blinding process of an ideology or an ideal. Then it is possible to bring about a radical change in what I am, in `what is'.</p>	<p>अंततोगत्वा जीवन तो एक दर्पण है जिसमें मैं स्वयं को क्रिया करते हुए देख सकता हूँ। परंतु हम लोग यह नहीं देख पाते कि सचमुच में क्या घट रहा है, क्योंकि हम जो कुछ हैं उससे कुछ पूर्णतः भिन्न होना चाहते हैं। मेरी समझ से अखण्डता तभी संभव है जब मैं आदर्शवाद या आदर्श की अंधी प्रक्रिया के बिना यह देख लेता हूँ कि सचमुच में मैं क्या हूँ, तभी जो मैं हूँ या “जो है” में मौलिक परिवर्तन लाना संभव है।</p>
<p>Question: How do these illuminating talks fulfil and help your purpose? The world has been listening since a long time to the gospel of revolt, the cult of attaining to supreme truth or burning oneself and thereby achieving the highest and the sublimest. But, what is the reaction, is it creative or recreative?</p>	<p>प्रश्न ये दिव्य वार्तयें आप के उद्देश्य को कैसे परिपूर्ण करती हैं और उसमें किस प्रकार सहयोग करती है यह दुनिया बहुत दिनों से क्रान्तिकारी उपदेशों को सुनती आ रही है कि परम सत्य को उपलब्ध करना ही धर्म है याकि अपने अहंकार को भस्मीभूत कर दो जिसमें सर्वोच्च एवं चरम की प्राप्ति हो। परंतु इन सबकी प्रतिक्रिया क्या होती है, क्या सर्जनात्मक या आनन्ददायक होती है?</p>
<p>Krishnamurti: What do you mean by fulfilling? You ask whether these talks help you to fulfil. Do you think there is such a thing as fulfilment? It is only when you are thwarted that you want to fulfil. It is only when you</p>	<p>कृष्णमूर्ति परिपूर्ण होने से आपका क्या मतलब है? आपने पूछा है कि क्या ये वार्तयें परिपूर्ण होने में आपका सहयोग करती हैं? क्या आप सोचते हैं कि कोई ऐसी भी चीज है जो परिपूर्ण है? ऐसा प्रश्न तभी उठता है जब आप परिपूर्ण होना चाहते हैं परंतु उसके</p>

<p>want to become a judge or somebody, that there is the fear of not fulfilling. But if you do not want to become anything, then there is no problem of fulfilment.</p>	<p>लिए आपको रोका जाता है। यह तभी होता है जब आप न्यायाधीश होने चाहते हैं या कुछ और होना चाहते हैं तो वहां उसे परिपूर्ण न होने का भय होता है। परंतु आप कुछ अन्यथा नहीं होना चाहते तो परिपूर्णता की कोई समस्या ही नहीं होती।</p>
<p>All of us want to become something, either in this world or in the next world, inwardly or outwardly; and our purpose is well defined, because our desires are always compelling us towards a particular end which we call fulfilment. If we do not understand these desires and when they are thwarted, there is conflict, misery, pain, and so an everlasting search for fulfilment. But, when one begins to understand the ways of desire, the innumerable urges, conscious as well as unconscious, there is no question of fulfilling. It is the self the me, that is always craving to fulfil, either as the great people of this land or to fulfil inwardly - to become something, to attain liberation, moksha or what you will. But if we understand the implications of desire - that is, the implications of the self, of the me - then there is no question of fulfilling.</p>	<p>हममें से सभी लोग कुछ-न-कुछ होना चाहते हैं, इस संसार में या अगले किसी संसार में, आंतरिक जगत में या बाह्य जगत में, हमारा उद्देश्य स्पष्ट होता है क्योंकि हमारी वासनाएं हमें सदा ही किसी सीमा के अंत तक जाने को बाध्य करती हैं जिसे हम परिपूर्ण होना कहते हैं। यदि हम इन वासनाओं को नहीं समझते और जब उन्हें अवरुद्ध किया जाता है तो वहां द्वंद्व एवं कष्ट होता है और इस प्रकार परिपूर्णता की अंतहीन खोज चलती रहती हैं। परंतु जब कोई वासना के मार्गों को, अनगिनत चेतन एवं अचेतन एवंगो को समझना आरंभ कर देता है तो परिपूर्ण होने का प्रश्न ही नहीं उठता। यह तो हमारा “अहं” है हमारा ‘मैं’ है जो सदा ही पूर्णता की याचना करता है, चाहे वह इस पृथ्वी का महानतम व्यक्ति होना चाहता हो या अन्तर्तम की पूर्णता चाहते हो अर्थात् कुछ ऐसा होना वासना के निहितार्थों को समझ लेते है। अर्थात् स्वयं के “मैं” के निहितार्थ को, तब उसे परिपूर्ण होने का प्रश्न ही नहीं उठता।</p>
<p>Question: Does not the emphasis on quieting the mind reduce creativity?</p>	<p>प्रश्न क्या मन की शांति पर बलाघात करना सर्जनशीलता को कम करना नहीं?</p>
<p>Krishnamurti: What is creativity and what is understanding? To understand creativity, there must be no fear. Is it not so? After all, most of our minds are imitative. We are ridden by authority, we have innumerable fears, conscious as well as unconscious. A mind so elaborate so small, so petty, so conditioned - can such a mind be creative? It can only be creative in the deeper sense of the word - not in the sense of writing off a couple of poems or painting some pictures - when you understand the whole process of fear. To find out fear, must you not search the workings of your mind, must you not be watchful of the ways how the mind imitates, why it copies authority? It is</p>	<p>कृष्णमूर्ति सर्जनशीलता क्या है और समझ क्या है? सर्जनशीलता को समझने के लिए भय का न होना आवश्यक है। क्या ऐसा नहीं है? आखिरकार हममें से अधिकांश का मन तो नकलची है हम प्रमाणों के आधार पर चलते हैं, हमारे चेतन एवं अचेतन स्तर पर अनगिनत भय हैं। यह मन इतना जटिल, इतना संकीर्ण, इतना क्षुद्र एवं इतना संस्कारित है कि क्या ऐसा मन सर्जनशील हो सकता है? यह सर्जनशील शब्द के गहरे अर्थ में सर्जनशील तभी हो सकता है दो एक कविताएं लिखने के अर्थ में नहीं, कुछ चित्रों की चित्रकारी कर लेने के अर्थ में नहीं, जब आप भय की सम्पूर्ण प्रक्रिया को समझ जाते हैं। भय का पता लगाने में क्या आप को मन के कार्यों की खोज नहीं करनी चाहिए क्यो आपको उन विधाओं पर ध्यान नहीं देना</p>

only then it is possible for the mind to be creative.	चाहिए कि मन कैसे नकल करता है, वह प्रमाणों की नकल करता है? केवल तभी यह संभव हो पाता है कि मन सर्जनशील हो।
Is the mind creative or is creativeness something entirely different? After all, what is the mind? Mind is the result of time, time being a process. Mind is the result of the past, the past being the culture, the tradition, the experience, the various economic and other unconscious influences; all that is the mind. Can the mind which is the result of time, be creative? Is not creativeness something out of time, beyond time, and therefore, beyond the mind? There is no Indian creativeness or European creativeness. Culture is not Indian or European, occidental or oriental; the expression of it may be.	क्या मन सर्जनशील होता है या सर्जनशीलता कोई बिलकुल ही भिन्न चीज है? आखिरकार मन है क्या? मन समय का परिणाम है यह समय की प्रक्रिया हैं। मन अतीत का परिणाम है, अतीत यानी संस्कृति, परम्परा अनेकों आर्थिक एवं अन्यान्य अचेतन प्रभावों का होना, यही है मन। क्या मन के समय का परिणाम है? क्या मन सर्जनशील हो सकता है? क्या सज्जनशीलता समय के बाहर, समय के पार की चीज नहीं है अर्थात क्या यह मन के पार की चीज नहीं है? भारतीय सर्जनशीलता या योरोपीय सर्जनशीलता जैसी कोई चीज नहीं होती। संस्कृति न तो भारतीय होती है न योरोपीय, न तो यह पश्चिमी देशीय होती है न पूर्वदेशीय, हां इसकी अभिव्यक्ति भिन्न भिन्न हो सकती हैं।
That creative something, that creative reality, that truth, God, what you will, is surely beyond time.	सृजन कुछ और ही चीज होती है, जहां सृजन करने की वास्तविक शक्ति होती है, वही सत्य है, वही ईश्वर है, या जो कुछ भी आप उसे कहना चाहे निश्चित ही वह समय के पार होता हैं।
The mind that is the result of time cannot conceive or experience the unknown; so, the mind has to free itself from the known, from the knowledge, from the various experiences, traditions; then only would it be capable of receiving the unknown. It is the unknown that is creative, not the mind that knows how to create.	मन जो समय का परिणाम है वह अज्ञात का अनुमान या अनुभव नहीं कर सकता, अतः मन को ज्ञात से, ज्ञान से, अनेकों अनुभवों से, परम्पराओं से स्वतः मुक्त होना होता है केवल तभी वह अज्ञात को ग्रहण करने के योग्य हो पाता हैं। अज्ञात ही सृजनशील होता है, मन नहीं वह तो केवल यही जानता है कि सृजन कैसे होता हैं।
Question: When there is conflict between the heart and the mind, which should be followed?	प्रश्न जब हृदय एवं मन के बीच द्वंद्व हो तो किसकी सुनी जाय?
Krishnamurti: Is conflict necessary? Is this not the question; what to follow the mind or the heart?	कृष्णमूर्ति क्या द्वंद्व होना आवश्यक है? क्या यही न आप का प्रश्न है? तभी न मन या हृदय के सुनने की बात उठेगी?
First, let us understand if conflict is necessary. When the conflict arises, then the question	पहले यह समझा जाय कि द्वंद्व का होना आवश्यक है या नहीं। जब द्वंद्व उठेगा तभी यह प्रश्न आयेगा कि

<p>comes into being as to which I should follow, this or that. Why do we have conflicts? Will conflict produce understanding?</p>	<p>किसकी सुनी जाय इसकी या उसकी? हम द्वंद्व में होते ही क्यों है, क्या द्वंद्व समझ पैदा करेगा?</p>
<p>Perhaps you think this I am not answering your question. All that you want to know is what you should follow. It is a very superficial demand, and you are satisfied if you are merely told what to do. Unfortunately, as most of us are today, we know only what to think, not how to think; therefore, the problem becomes very superficial. If we want to think out a question of this kind, we must put aside 'what to think' and enquire into 'how to think'. If we know how to think, the problem is not. But, if you say, 'I must follow this', or 'I must not follow that' or 'which shall I choose?', then the problem arises.</p>	<p>शायद आप सोचते हैं कि मैं आपके प्रश्न का उत्तर नहीं दे रहा हूँ। यह मांग तो बड़ी ही सतही है और यदि आपको यह बता भी दिया जाय तो आप इससे संतुष्ट भी हो जाते हैं। दुर्भाग्य से हममें से अधिकांश आज ऐसे ही है, हम केवल यही जानते हैं कि क्या सोचा जाय, यह नहीं कि कैसे सोचें, इसीलिए समस्या बड़ी सतही हो जाती है। यदि हम इस तरह की समस्या पर विचार करना चाहते हैं तो हमें इस बात को एक तरफ सरका कर रख देना चाहिए कि "क्या सोचें" और इस बात की छानबीन करनी चाहिए कि "कैसे सोचें"। यदि हम जानते हैं कि कैसे सोचा जाय तो कोई समस्या ही नहीं होती। परंतु यदि हम यह कहते हैं "मुझे इसका अनुकरण अवश्य करना चाहिए" या "मुझे उसका अनुकरण नहीं करना चाहिए" तभी समस्या खड़ी होती है।</p>
<p>If you once really go into it clearly, deeply, the problem 'what to do' is a choice, is it not? Will choice clarify or put an end to conflict? Is there not another way of acting, not between the two, but which is the understanding of the demands of the mind and the demands of the heart without saying which should be done. Between them all, I must not follow one or the other but understand each demand, not in comparison. Then only is it possible to free the mind from choice and therefore conflict.</p>	<p>यदि आप सचमुच में एक बार इसकी स्पष्टता एवं गहनता में चले जाते हैं तो "क्या करना है" इस समस्या का चयन हो जाता है कि नहीं? क्या चुनाव स्पष्ट करेगा या द्वंद्व का अंत करेगा? क्या कार्य करने का कोई दूसरा तरीका नहीं है, उन दोनों के बीच का नहीं अपितु यह कहे बिना कि किसको किया जाय, मन एवं हृदय के मांग की एक समझ हो। मुझे पहले का अथवा दूसरे का अनुशरण नहीं करना चाहिए, अपितु प्रत्येक मांग को समझा जाय, वह भी तुलना करके नहीं। केवल तभी मन के लिए चुनाव से मुक्ति, द्वंद्व से मुक्ति संभव है।</p>
<p>All this requires a mind that is really attentive not only to what I am saying but also to its own processes and understands them. But very few of us want to do that. Very few of us are serious. We are serious about something superficial - diversion or excitement. But to really go into the whole problem of existence, of the ways of thought, requires not an hour's attention at a particular meeting but requires the understanding of the mind all the time as it lives and acts. For that, few of us are willing.</p>	<p>इन सबके लिए ऐसे मन की आवश्यकता होती है जो सचमुच में सावधान हो, जो कुछ मैं कह रहा हूँ केवल उसके प्रति नहीं, अपितु अपनी प्रतिक्रियाओं एवं समझ के प्रति भी। परंतु हममें से बहुत ही थोड़े लोग इसे करते हैं। हममें से बहुत थोड़े लोग ही गंभीर हैं। हम लोग बहुत ही सतही चीजों के लिए गंभीर होते हैं जिससे उत्तेजना की दिशा बदली जा सके। परंतु समस्त अस्तित्वगत समस्याओं में जाने के लिए, एवं विचार के तरीकों में जाने के लिए किसी विशेष तरह की सभा में केवल एक घण्टे की सावधानी ही आवश्यक नहीं है, अपितु इसके लिए हर क्षण मन को समझने की</p>

<p>In that, there is no risk, you do not get a good job, you do not become famous, you do not become successful. As long as we want to become famous, successful, powerful, popular, we would create misery, conflict which brings about war.</p>	<p>अवश्यकता होती है कि कैसे यह रहता है और कैसे कार्य करता हैं। उसके लिए हममें से कुछ लोग ही इच्छुक हैं। उस कार्य में कोई जिम्मेदारी नहीं होती, उससे आपको कोई अच्छा कार्य मिलने वाला नहीं है, उससे आप की कोई प्रसिद्धि नहीं होगी, न ही आप को कोई सफलता मिलेगी। जब तक हम प्रसिद्ध, सफलता, शक्ति और लोकप्रियता चाहते हैं तब तक दुख और द्वंद्व पैदा करते रहेंगे जो युद्ध के निकट लाता हैं।</p>
<p>J. Krishnamurti Benares, India 24th January 1954 3rd Talk at Benares Hindu University</p>	<p>टाक्स विथ इण्डियन स्टुडेंट्स तृतीय वार्ता (२४ जनवरी १९५४) काशी हिन्दू विश्व विद्यालय</p>
	<p>अनुवादक : डॉ. महादेव राम विश्वकर्मा</p>
	<p style="text-align: center;">सहचिंतन की कला</p>
<p>I think it is important to learn the art of thinking together. The scientists and the most uneducated human beings think. They think according to their profession, specialization, and according to their belief and experience. We all think objectively or according to our own particular inclination, but we never seem to think together, to observe together. We may think about something, a particular problem or a similar experience, but this thinking does not go beyond its own limitation. Thinking together not about a particular subject but the capacity to think together is entirely different. To think together is necessary when you are facing the great crisis that is taking place in the world, the danger, the terror, the ultimate brutality of war. To observe this, not as a capitalist, socialist, the extreme left or extreme right, but to observe it together demands that we comprehend not only how we have come to this rotten state, but also that we together perceive a way out. The business man or the politician looks at this problem from a limited point of view, whereas we are saying we must look at life as a whole not as British, French or Chinese.</p>	<p>मैं सोचता हूँ, समवेत रूप से सोचने की कला सीखना महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक और सर्वाधिक अशिक्षित मानवप्राणी सोचते हैं। वे अपने पेशे के अनुसार सोचते हैं, विशेषज्ञता के अनुसार, और अपने विश्वास और अनुभव के अनुसार। हम सब वस्तुपरक रूप से सोचते हैं अथवा हमारी अपनी विशिष्ट प्रवृत्ति के अनुसार, लेकिन हम कभी भी साथ सोचते प्रतीत नहीं होते, साथ अवलोकन करते। हम किसी चीज से बोर में सोच सकते हैं, कोई खास समस्या या कोई समाना अनुभव, लेकिन यह सोचना इसकी अपनी सीमा से आगे नहीं जाना। समवेत सोच किसी खास मुद्दे के बारे में नहीं बल्कि साथ सोचने की क्षमता सर्वथा भिन्न हैं। साथ सोचना आवश्यक है जब आप उस महान संकट को झेल रहे हैं जो दुनिया में घट रहा है, वह खतरा, वह आतंक, युद्ध की चरम पाशविकता। इसे साथ देखना, एक पूंजीपति की तरह नहीं, एक सामाजवादी की तरह नहीं, चरम वाम या चरम दक्षिण की तरह नहीं, बल्कि इसे साथ देखने की मांग है कि हम न केवल यह समझें कि हम इस दुरव्यवस्था तक कैसे पहुंचे बल्कि यह भी कि हम साथ-साथ मुक्ति मार्ग देखें। एक व्यवसायी या एक राजनीति इस समस्या को एक सीमित नजरिए से देखता है, जबकि हम कह रहे हैं कि हमें जीवन को अवश्यमेव समग्रता में देखना चाहिए, ब्रिटिश, फ्रेंच या चायनीज की तरह नहीं।</p>

<p>What does it mean to look at life as a whole? It means to observe the human being, ourselves, without any division of nationality, to see life as one single movement without a beginning and without an end, without time, without death. This is a difficult thing to understand because we think of the part not the totality. We divide, hoping to understand the whole from its part.</p>	<p>जीवन को समग्रता में देखने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है मानवप्राणी को देखना, हम सबको, बगैर किसी राष्ट्रीयता के विभाजन के, जीवन को एक और एक ही गति के रूप में देखना, अनादि और अनन्त, समय के बगैर, मृत्यु के बगैर। इसे समझना एक मुश्किल चीज है क्योंकि हम अंश के बारे में सोचते हैं, सम्पूर्णता के बारे में नहीं। हम मांग करते हैं, सम्पूर्ण को उसके अंश के समझने की आशा करते हुए।</p>
<p>The art of thinking together needs to be studied carefully, examined to see whether it is at all possible. Each one clings to his own way of thinking according to his own particular reactions, experience, prejudice. This is how we are conditioned, which prevents the capacity to think together. Thinking together does not mean to be of one mind. Our minds can come together about an ideal, an historical conclusion or some philosophic concept and work for that but this is essentially based on authority.</p>	<p>समवेत रूप से सोचने की कला का सावधान अध्ययन करने की जरूरत है, परीक्षणपूर्वक देखने की कि यह कतई सम्भव है या नहीं। हर कोई सोचने के उसके निजी ढंग से चिपका रहता है उसकी अपनी विशिष्ट प्रक्रियाओं के अनुसार, अनुभव के, पूर्वाग्रह के अनुसार। इस तरह हमारा अनुकूलन होता है जो समवेत रूप से सोचने की क्षमता को बाधित करता है समवेत रूप से सोचने का अर्थ एकमति का होना नहीं है। हमारे लिए आदर्श के बारे में साथ हो सकते हैं, किसी ऐतिहासिक निष्कर्ष अथवा किसी दार्शनिक अवधारणा के बारे में और उसके लिए कार्य कर सकते हैं लेकिन यह सारतः सत्ताधिकार पर आधारित है।</p>
<p>Freedom is the essence of thinking together. You must be free from your concept, prejudice and so on. I also must be free and we come together in this freedom. It means dropping all our conditioning. It implies complete attention without any past. The present world crisis demands that we totally abandon our tribal instincts that have become our glorified nationalisms. Thinking together implies that we totally abandon self-interest identified as the British, the Arab, the Russian and so on.</p>	<p>समवेत रूप से सोचने का सार है स्वतंत्रता। आपको अवश्यमेव मुक्त होना चाहिए अपनी अवधारणा से, पूर्वाग्रह से और इसी तरह। मुझे भी अवश्यमेव मुक्त होना चाहिए और इस स्वतंत्रता में हम साथ होते हैं इसका अर्थ है हमारे समस्त अनुकूलन को तज देना। इसमें निहित है सम्पूर्ण अवधान बगैर किसी अतीत के। वर्तमान विश्व संकट की मांग है कि हम अपनी कबीलाई सहजवृत्तियों को सम्पूर्णतया त्याग दें जो हमारे महिमामण्डित राष्ट्रवाद बन गये हैं। समवेत रूप से सोचने का निहितार्थ है कि हम आत्म-हित को सर्वथा त्याग दें। जो ब्रिटिश, अरब, रूसी और इसी तरह के होने के अहसास से तादात्म्य हैं।</p>
<p>Then what is a human being to do facing this danger of separatism, of self-interest? There is the expansionist movement of one power or another, economically, politically, or of one or two bigoted, neurotic leaders. What is a human being to do confronted with this? Either you</p>	<p>तब पृथकतावाद के, स्वार्थ-चिंता के इस खतरे को झेलते हुए मानव प्राणी को क्या करना है? एक शक्ति अथवा दूसरी का विस्तारवादी आंदोलन है, आर्थिक, राजनीतिक, अथवा एक या दो कट्टर स्नायु रोगी नेताओं का। इसके मुकाबले एक मानवप्राणी को क्या</p>

<p>turn away from it and withdraw into indifference, or you join some political activity, or take refuge in some religious group. You cannot escape from this. It is there. What do I do? I refuse the present pattern of social structures, the nonsensical irreligious ways. I refuse all that. So I am totally isolated. This isolation is not an escape nor some form of ivory tower, some romantic illusion. Because I see the futility, the divisiveness, the pursuit of self-interest of nationalism, of expansionism, of the irreligious life, I reject the total destructiveness of this society. So I stand alone. As I am not contributing psychologically to the destructive consciousness of man, I am in the stream of that which is goodness, compassion and intelligence. That intelligence is acting, confronting the madness of the present world. That intelligence will be acting wherever the ugly is.</p>	<p>करना है या तो आप इससे विमुख हो जायें और उदासीनता में सिमट जायें अथवा आप किसी राजनीतिक गतिविधि से जुड़ें या किसी धार्मिक समूह में शरण लें। आप इससे भाग नहीं सकते। यह है। मैं क्या करूँ? सामाजिक संरचनाओं के वर्तमान वितान को मैं नकारता हूँ। इस तरह में सम्पूर्णतया अलगाव महसूस करता हूँ। यह अलगाव पलायन नहीं, न ही किसी तरह की गजदन्ती मीनार, कोई रूमानी भ्रम। क्योंकि मैं निरर्थकता देखता हूँ, विभाजकता, स्वार्थपूर्ति का लक्ष्य राष्ट्रवाद का, विस्तारवाद का, अधार्मिक जीवन का, मैं इस समाज की सम्पूर्ण विनाशिका को नकारता हूँ। अतः मैं अकेला खड़ा हूँ चूंकि मैं आदमी की विनाशक चेतना में मनोवैज्ञानिक रूप से कोई योगदान नहीं कर रहा, मैं उस धारा में हूँ जो अच्छाई, करुणा, बुद्धिमत्ता की हैं। वह बुद्धिमत्ता कर्मशील है, वर्तमान विश्व के पागल पन का मुकाबला करती हुई। जहां भी कुछ कुरूप होगा, वहां वह बुद्धिमत्ता क्रियाशील हो उठेगी।</p>
<p>J. Krishnamurti Letters to the Schools Volume 2 15th January 1982</p>	<p>स्कूलों के लिए पत्र, (द्वितीय भाग), १५ जनवरी १९८२</p>
	<p>अनुवाद डॉ. पुष्पिता</p>